चंचल, चोर, चुगिल, सचु सुञाणनि कीनकी,
खोहिन खाम खियाल सां, मानुखु जनमु अमुलु,
सचारनि सोधे लधो, अनभइ घरु असुलु,
कटे कलिपत कुलु, सामी माणिनि सांत सुखु.

सामीजी कहते हैं कि इस संसार में रहने वाले चंचल स्वभाव के लोग, चोर और चुगलखोर इन्सान परम सत्य (परमेश्वर) को नहीं पहचानते। ऐसे मूर्ख एवं अज्ञानी जीव अनेक भ्रांत विचारों में अपना अनमोल मनुष्य-जन्म व्यर्थ ही गँवाते हैं। किन्तु इसके विपरीत जो सच्चे मनुष्य हैं, उन्होंने अपनी अनुभूति द्वारा अपना असली, मूल स्थान (परमेश्वर) खोज निकाला है अर्थात् उन्हें अपने अंदर परमात्मा की प्रतीति हुई है। अत: अब वे अपने मन से भ्रांति/भ्रम आदि निकाल कर सच्ची शांति, संतोष एवं सुख का अनुभव कर रहे हैं।

मनुष्य-देह मिलना भाग्य की बात है। मनुष्य-जन्म अनमोल माना गया है। यह बार-बार नहीं मिलता। इसलिए हीरे जैसी मूल्यवान जीवन को सार्थक करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। संत-महात्मा कहते हैं कि चौरासी में पड़ कर मनुष्य अनेक प्रकार के दुख भोगता रहता है। अत: चौरासी के फेरे से बचने के लिए मनुष्य - शरीर मानो मुख्य द्वार है। इस दुर्लभ देह के मिलने पर मनुष्य को चाहिए कि वह मोक्ष प्राप्त करने हेतु नाम-स्मरण करे, भक्ति करे, गुरु से ज्ञान प्राप्त कर परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयत्न करे। इसी से उसे सच्चा सुख-संतोष मिलेगा।

संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं- ज्ञानी और अज्ञानी । जिनके आत्मबोध हुआ है, वे ज्ञानी हैं। जिनके आत्मबोध नहीं हुआ है, वे अज्ञानी हैं। दुनिया में दिखाई देने वाले चंचल, चोर एवं चुगलखोर इन्सान अज्ञानी होते हैं। उन्हें सत्य, आत्मा, परमात्मा, परब्रह्म की पहचान नहीं होती। ऐसे मनुष्य अनेक प्रकार के भ्रम एवं भ्रांतियों में पड़कर अपना जीवन व्यर्थ ही गँवाते रहते हैं। वे झूठ की, असत्य की कमाई करते रहते हैं, सत्य की नहीं। वे परम सत्य से कोसों दूर रहते हैं। उन्हें अपने अनमोल जन्म की प्रतीति नहीं होती। परमात्मा को पाने की अभिलाषा, परम सुख प्राप्त करने की इच्छा अथवा मोक्ष-प्राप्ति की कामना तो सच्चे मनुष्यों में होती है। वे ही परम संतोष के अधिकरी होते हैं। परमात्मा के ध्यान और भजन को सोना/स्वर्ण मानते हुए संत कबीर कहते हैं-

कंचन केवल हरि भजन, दूजा काँच कबीर।
झूठा आल जंजाल तजि, पकड़ा साँच कबीर॥

■